5

उत्तर छायावादी कविता
(दिनकर और बच्चन)

हिंदी कविता में छायावाद के बाद की काव्यधाराएँ 'उत्तर छायावाद' और 'प्रगतिवाद' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका आरंभ 1936 ई. के आस-पास छायावाद के अंत की घोषणा के साथ हुआ। उत्तर छायावादी युग की कविता में छायावाद की प्रवृत्तियों के साथ-साथ कुछ नवीन प्रवृत्तियाँ भी जुड़ गईं। इस युग की कविता में व्यक्तिगत अनुभूतियों के साथ ही मस्ती की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। संकीर्णता का विरोध, नश्वरता की अनुभूति और तटस्थता का भाव भी इसमें मिलता है।

इस युग के एक प्रतिनिधि कवि बच्चन हैं। इनकी कविता की भाषा सहज, सरल और शैली गीतात्मक है। बच्चन आदि के समानांतर ऐसे प्रगतिवादी कवि भी लिख रहे थे जिनमें समाजवादी विचारधारा के प्रति गहरा आकर्षण था। आपने हिंदी की माध्यमिक पाठ्यपुस्तक में दो प्रगतिवादी कवियों– केदारनाथ अग्रवाल और नागार्जुन की कविताएँ पढ़ी हैं। इन कविताओं की प्रवृत्तियों से आप परिचित हो चुके हैं। प्रगतिवादी कविता समाज में शोषण का विरोध करती है, शोषित में शक्ति देखती है, सामाजिक-आर्थिक विषमता पर व्यंग्य करती है, प्रेम और सौंदर्य को सामाजिक मूल्यों से जोड़कर देखती है। श्रमिक वर्ग के प्रति गहरी संवेदनशीलता और समाज के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण इस कविता की प्रमुख विशेषता है। आइए, इस पाठ में हम उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' और हरिवंश राय 'बच्चन' की कविताएँ पढ़ें और समझें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता में निहित दर्शन और विचारों की सराहना कर उन्हें प्रस्तुत कर सकेंगे;
- जीवन में समझौता करने की स्थितियों के गुण-दोष का उल्लेख कर सकेंगे;

- जीवन के उद्देश्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- भूत और भविष्य की चिंता से परे वर्तमान का महत्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता में प्रयुक्त लाक्षणिक प्रयोगों और प्रतीकों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- कवि की ओजपूर्ण और दार्शनिक भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- पठित कविताओं के भाव एवं शिल्प-सौंदर्य का उल्लेख कर सकेंगे।

(क) रामधारी सिंह 'दिनकर'

5.1 मूल पाठ

चित्र 5.1 : रामधारी सिंह दिनकर

परशुराम के उपदेश

अब आप इस कविता को तीन-चार बार ओजपूर्ण स्वर में पढ़ जाइए-

(i)

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।

चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!

(ii)

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।

वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

(iii)

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।

पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे!
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे!

शब्दार्थ

विभा – चमक, कांति
पीयूष – अमृत, दूध
तुंग – ऊँचा
शैल-शिखर – पर्वत की चोटी
सोम – अमृत
अशनि-घात – वज्र के समान कठोर चोट
संगीन – नुकीला हथियार जो बंदूक के आगे लगाया जाता है।
शोणित – खून
अयाल – सिंह की गर्दन के बाल
किरिच – छोटी बरछी, पेट में घोंपी जाने वाली तलवार या कटार
चाम – चमड़ी, त्वचा, खाल

बोध प्रश्न 5.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि ने किसके समान जीने के लिए कहा है-

   (क) वैरागियों के (ख) योगियों के

   (ग) विजयी के (घ) चट्टानों के

2. जाति की लगन और व्यक्ति की धुन किसे कहा गया है-

   (क) स्वातंत्र्य को (ख) भीतरी गुणों को

   (ग) वीरत्व को (घ) ओज को

3. कवि के अनुसार स्वाधीनता के लिए किसे बहा देना उचित है-

   (क) आँधियों को (ख) अश्रुओं को

   (ग) उमंग को (घ) ख़ून को

5.2 आइए समझें

अंश-1

प्रसंग : भारत पर चीन के आक्रमण के पश्चात् कवि ने देशवासियों को संबोधित करते हुए इस कविता की रचना की है। विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से कवि देशवासियों में उमंग और उत्साह भरते हुए वीरता का भाव जगाना चाहता है तथा देशवासियों से उद्यम और पराक्रम की अपेक्षा करते हुए वैराग्य छोड़ने की बात करता है।

व्याख्या : आप कविता के इस प्रथम अंश को ओजपूर्ण स्वर में पढ़कर इसकी व्याख्या पर ध्यान दीजिए-

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!

कवि का विचार है कि हमें समयानुसार आचरण करना चाहिए। वैराग्य धारण करना प्रत्येक परिस्थिति में ठीक नहीं है। इसलिए वह देशवासियों से कहता है- तुम वैराग्य छोड़ो, अपनी भुजाओं की शक्ति को पहचानो अर्थात् संसार के प्रति उदासीनता का मार्ग छोड़कर सकर्मक बनो। अपनी शक्ति के अनुरूप तलवार और बंदूक उठाओ और कठिन परिस्थितियों में भी अपना मार्ग खोजो। दुर्गम सीमाओं को पार करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो। ऐ देशवासियो!, योगी नहीं, वरन विजयी के समान जीना सीखो। 'विजयी के सदृश जियो रे!' पंक्ति में कवि देशवासियों को कर्मठ बनाना चाहता है। वह चाहता है कि देशवासी जीवन-संग्राम में अपने कर्त्तव्य पथ पर सदा विजयी बनें। इस पंक्ति में उपमा अलंकार का सौंदर्य भी दिखाई देता है।

टिप्पणी

योगी योग-ध्यान में लीन सांसारिक मोह से दूर चुप बैठा होता है, जबकि वीर विजय की लालसा में कर्त्तव्य-पथ पर चलता हुआ, विजय पताका फहरा कर ही दम लेता है।

कवि यहाँ कहना चाहता है कि संघर्ष की ज़रूरत के समय योगियों से देश का उद्धार नहीं होगा, वीरों से ही देश की रक्षा होगी। दोनों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

योगी	**विजयी (कर्मवीर)**
योग, ध्यान में लीन	दृढ़निश्चयी
निर्मोही	निर्भीक
असांसारिक	वीर
निष्क्रिय	उत्साही
उदासीन	परिश्रमी

लेकिन कवि का तात्पर्य यह नहीं है कि हमेशा लड़ाई-झगड़े करते रहो। अहिंसा को त्यागने पर कवि का बल इसलिए है कि जब शत्रु हमारे ऊपर आक्रमण कर दे, तब भी अहिंसा के दर्शन पर अड़े रहना उचित नहीं होता। कभी-कभी देश की सुरक्षा, राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हिंसा आवश्यक बन जाती है।

टिप्पणी

(क) 'बाँहों की विभा' से तात्पर्य है- भुजाओं की शक्ति। कवि यहाँ कहना चाहता है कि प्रत्येक देशवासी अपनी शक्तियों को पहचान कर उनका उपयोग करे।

(ख) 'चट्टानों की छाती से दूध निकालने' का अर्थ है-कठिन और दुर्गम परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेना।

(ग) 'पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो'– ऐसा माना जाता है कि शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा से अमृत-वर्षा होती है। यहाँ कवि का तात्पर्य है कि चंद्रमा में जो अमृत-तत्त्व है, उसे पाने की चेष्टा करो अर्थात् ऊँचे से ऊँचा लक्ष्य बनाकर उसका बहुमूल्य तत्त्व पाने की कोशिश करो।

(घ) 'चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे।'–जिस प्रकार कोई पर्वतारोही सबसे ऊँची चोटी पर चढ़कर अपनी विजय की पताका लहरा देता है और ऊँचाई का आनंद प्राप्त करता है, वैसे ही सभी बाधाओं को पार करके विजय का अमृतपान करो।

पाठगत प्रश्न 5.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. असंभव लगने वाले उद्देश्य को कैसे संभव बनाया जा सकता है–

(क) तपस्या करके (ख) शिलाएँ तोड़कर

टिप्पणी

(ग) भुजाओं के बल से (घ) सोच का पान करके

2. 'है रुकी जहाँ भी धार' प्रतीक है :

(क) पानी की धारा का

(ख) मार्ग में आने वाली बाधाओं का

(ग) नदी की धार के बीच में आई चट्टान का

(घ) रास्ते में पड़ने वाले तालाब का

अंश-2

प्रसंग : इस अंश में कवि स्वतंत्रता को मानव-जीवन के लिए अनिवार्य मानता है और कहता है कि उद्यमी लोग ही स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं। हम जानते हैं कि संसार में प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है।

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

व्याख्या : जब पक्षी भी स्वतंत्र रहना चाहता है तो भला हम मानव स्वतंत्र क्यों नहीं रहना चाहेंगे? मनुष्य जब गुलाम होता है या उनकी स्वतंत्रता पर संकट मंडराता है, तो वह स्वतंत्र होने या स्वतंत्रता को बचाने के लिए क्या नहीं करता! भारतवासियों ने आज़ादी पाने के लिए अँग्रेज़ों से संघर्ष किया। आज़ाद होने के बाद भी इस देश पर संकट आया तो जागरूक लोगों ने स्वतंत्रता की चेतना का प्रचार किया। इसी भाव को कवि ने इन पंक्तियों में व्यक्त करते हुए कहा है-सभी मानव स्वतंत्र रहना चाहते हैं। यह मनुष्य जाति की लगन और प्रत्येक व्यक्ति की धुन या इच्छा है। उनकी सीखी हुई आदत नहीं, बल्कि मौलिक प्रवृत्ति है। संसार में वही राष्ट्र स्वतंत्र रह पाता है, जिसमें स्वाभिमान है, जो स्वतंत्रता के लिए बिना झुके मुसीबतों की चोट सह लेता है।

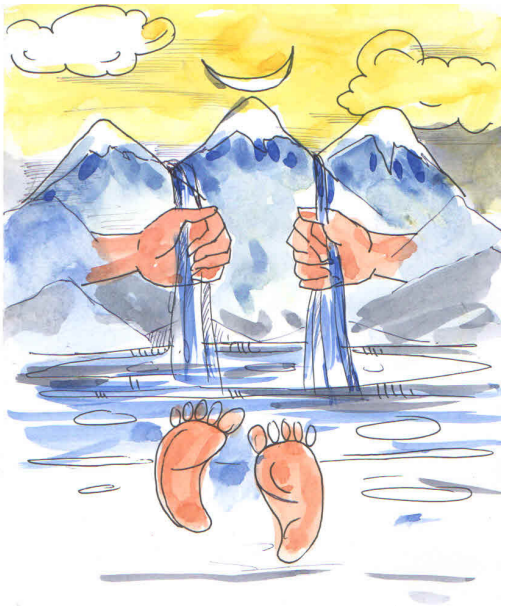

चित्र 5.2 : आजादी का संघर्ष

कवि आगे कहता है कि, ऐ देशवासियो! तुम वीरता छोड़कर दूसरों का पैर मत पकड़ो अर्थात् किसी की दासता मत स्वीकारो। आग से गुजरते हुए या कठिनाइयाँ सहते हुए अपनी आन बचाए रखो।

टिप्पणी

टिप्पणी

(क) 'अशनि-घात सहना'–कठोर से कठोर चोट सहना।

(ख) 'चरण गहना'–किसी के भरोसे रहना, दयनीय बन जाना।

(ग) 'आग सहना'–अग्नि से गुजरना या कठिनतम परिस्थितियों में से सफलपूर्वक निकलना।

अंश - 3

अब आप इस पाठ के तीसरे अंश की ओर ध्यान दीजिए।

प्रसंग : इस अंश में कवि देशवासियों में उत्साह जगाते हुए कहता है कि देश को स्वाधीन रखने के लिए जोखिम एवं संघर्ष आवश्यक है।

व्याख्या : कवि कहता है कि वह देश जहाँ के लोगों में कठिनाइयों के आने पर उत्साह न जागे, जहाँ छातियाँ संगीनों के वारों से डर जाएँ, जहाँ के नागरिक खून बहाने के बदले आँसू बहाएँ, वह देश कभी स्वतंत्र नहीं रह सकता।

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे!
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे!

आगे कवि आह्वान करता कि शेर के अयाल (गर्दन के बाल) पकड़ने का साहस रखो, आँधियों पर सवारी करने का हौसला दिखाओ और किरिचों (घोंपने वाली तलवार या कटार) को अपनी खाल से मढ़ने की निर्भीकता का प्रदर्शन करो। अर्थ हुआ कि साहस, हौसला, चुस्ती-फुर्ती दिखाने के साथ-साथ अपने शरीर का बलिदान करने वाली निर्भीकता ही वीरत्व की पहचान है। जिस देश में ऐसे वीर होंगे, वही देश स्वाधीन रह सकता है।

आशय है कि ऐ देशवासियो! तुम शत्रु की गर्दन पकड़कर शत्रुसेना पर टूट पड़ो। इस क्रम में तुम भी क्षत-विक्षत हो सकते हो, मगर इसकी बिल्कुल भी परवाह न करो।

स्वाधीन रहने की कीमत मृत्यु भी हो तो उसका वरण करो।

टिप्पणी

(क) कवि ने 'आँधियों' का प्रयोग शत्रु सेना के लिए किया है। एक विशाल सेना जो आँधी की भाँति आगे बढ़ी चली आ रही हो। एक वीर उनको देखकर युद्ध के लिए उमंग से भर उठता है। यहाँ 'अन्धड़' शत्रु रूपी आँधी का प्रतीक है।

(ख) 'अयाल' सिंह की गर्दन के बालों को कहते हैं। जो शक्तिवान होता है वह सिंह के बालों को पकड़कर उसकी पीठ पर बैठ जाता है और सवारी करता है। कवि वीरों का आह्वान करता है कि तुम सिंह रूपी ताकतवर शत्रु को देखकर डरो मत, उस पर चढ़ बैठो।

पाठगत प्रश्न 5.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. स्वतंत्र रहना मनुष्य का कौन-सा गुण है-

(क) भीतरी (ग) अर्जित

(ख) बाहरी (घ) क्षणिक

2. वीरों में उमंग तब उठती है जब वे-

(क) शत्रु को आँधी के समान आता देखते हैं।

(ख) शत्रु-सेना को भागते देखते हैं।

(ग) रक्त की बजाए आँसू बहाते हैं।

(घ) दुश्मन को पराजित होता देखते हैं।

5.3 भाव तथा शिल्प सौंदर्य

दिनकर अपने विशिष्ट काव्य-प्रयोगों से भाषा को लाक्षणिक बनाने में सिद्धहस्त हैं। वे ऐसे प्रयोगों की झड़ी लगा देते हैं; जैसे – बाँहों की विभा सँभालना, चट्टानों की छाती से दूध निकालना, चंद्रमाओं को पकड़ कर निचोड़ना आदि। किंतु ये प्रयोग मात्र चमत्कार पैदा करने के उद्देश्य से नहीं होते, बल्कि इससे भाषा और भावों की सामर्थ्य बढ़ जाती है।

वीरता और देशप्रेम दिनकर के काव्य का मूल स्वर है। प्रस्तुत रचना में दोनों का सुंदर समन्वय हुआ है। प्रत्येक पंक्ति प्रेरणा, उत्साह और उमंग से परिपूर्ण है।

परिस्थितियों की माँग को समझते हुए कवि ने वैराग्य का खंडन किया है और वीरता की भावना को जगाने के लिए लाक्षणिकता का सुंदर उपयोग किया है। स्वतंत्रता के महत्व को समझाते हुए उसकी रक्षा का भी ओजपूर्ण शब्दावली में आह्वान है।

दिनकर की कविताओं में भाषा का सुंदर प्रयोग मिलता है। भावानुरूप भाषा उनके संकेतों पर चलती दिखाई देती है। भाषा के तत्सम रूप के प्रयोग में वे अग्रणी दिखाई देते हैं; जैसे- विभा, शिला, शैल-शिखर पीयूष, वीरत्व, शोणित, अश्रु आदि।

कविता की लयात्मकता और गत्यात्मकता सराहनीय है, जिससे कविता के वाचन में अद्भुत आनंद आता है।

कविता की निम्नलिखित पंक्तियों पर ध्यान दीजिए, इनमें कवि ने लाक्षणिक प्रयोग किए हैं-

(क) वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो

(ख) पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो

(ग) किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे !

(ख) हरिवंशराय 'बच्चन'

चित्र 5.3 : हरिवंशराय बच्चन

बच्चन जी ने अपनी रचनाओं में बेबाकी से अपने निजी जीवन का वर्णन किया है। 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं' कविता हरिवंशराय 'बच्चन' की कृति 'निशा-निमंत्रण' से ली गई है। 1937-38 में लिखी इस रचना में कवि ने अपने जीवन के अनुभव को उजागर किया है। कवि की यह रचना भारतीय नारी के अस्तित्व को अपने संसार में विलीन कर देने का एक मार्मिक उदाहरण है। सन् 1936 में बच्चन जी की पत्नी श्यामा का निधन हो गया। कवि को अपनी पत्नी से अत्यधिक लगाव था और उनके निधन से बच्चन जी का जीवन अवसादों से घिर गया था। उन्होंने माना कि श्यामा के साथ वह भी कुछ मर गए और उनमें श्यामा भी कुछ जीती रहीं। यही हम सभी के जीवन का सत्य है कि यदि हमारा आत्मीय जन नहीं रहता है, तो हमारे अंदर भी कुछ मर जाता है और हमारी स्मृतियों में भी प्रिय जीवित रहता है।

यह कविता किसी व्यक्ति की निजी गाथा नहीं, अपितु व्यक्ति के जीवन के कोमल-कठोर पक्षों को जीवंत करती कविता है। इसके साथ ही इससे जीवन जीने की अद्‌भुत सीख भी प्राप्त होती है।

जीवन में कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें हम भूलना चाहते हैं और कुछ ऐसी होती हैं जिन्हें हम याद रखना चाहते हैं। हम उन बातों को भूलना चाहते हैं, जिनसे हमें कष्ट पहुँचता है और हम दुखी हो जाते हैं। इसके विपरीत जिन बातों को याद करने से हमें खुशी मिलती है, उन्हें हम बार-बार याद करना चाहते हैं। कवि हरिवंशराय 'बच्चन' ने भी अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे। अपनी स्मृतियों के मधुर और कटु अनुभव को उन्होंने इस कविता में पिरोया है। सुख और दुख दोनों ही पक्षों की सुंदर अभिव्यक्ति इस कविता में मिलती है। कवि के समक्ष स्मृतियों (मधुर-कटु) के चयन का द्‌वंद्‌व है। कवि स्मृतियों से मुक्ति प्राप्त करना चाहता है।

5.4 मूल पाठ

आइए, कवि हरिवंशराय 'बच्चन' की कविता 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं' को पढ़ें-

क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
रजनी की सूनी घड़ियों को, किन-किन से आबाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

टिप्पणी

याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की, दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से अपने दिन बर्बाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

दोनों करके पछताता हूँ,
सोच नहीं, पर, मैं पाता हूँ,
सुधियों के बंधन से कैसे अपने को आज़ाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

बोध प्रश्न 5.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि अपने को किसके बंधन से आज़ाद न कर पाने की विवशता व्यक्त कर रहा है–

   (क) भूलने के

   (ख) दुख के

   (ग) सुख के

   (घ) यादों के

2. आँखों में आँसू कब आते हैं?

   (क) सुखों के याद आने पर

   (ख) दुखों के याद आने पर

   (ग) उन्माद की अवस्था में

   (घ) रात्रि के होने पर

5.5 आइए समझें

अंश-1

कविता के इस अंश को एक बार फिर से पढ़ लीजिए।

प्रसंग – आपने देखा कि यह कविता जीवन के उन्माद और अवसाद पर आधारित है। अतीत में कवि के लिए कुछ सुखमय, प्रेम के क्षण रहे हैं, जो बीत चुके हैं। पहली ही पंक्ति में कवि ने अपनी स्मृति में बसी हुई कटु और मधुर यादों को पुनः स्मरण करने और न करने की

शब्दार्थ

अगणित–जिसे गिना न जा सके
उन्माद–प्रेम किसी भाव की अतिशयता, अत्यधिक प्रेम
क्षण–पल, थोड़ी देर
अवसाद–विषाद, दुख, सुस्ती,
रजनी–रात
घड़ी–समय, अवसर, वक़्त
आबाद–चहल-पहल
दिल भारी होना–दुख का अनुभव करना
सुधि–चेतना, होश, याद
सुधियों के बंधन–यादों से छुटकारा न पाना।

क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
रजनी की सूनी घड़ियों को,
किन-किन से आबाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

टिप्पणी

किंकर्त्तव्यविमूढ़ता दर्शाई है। कवि 'मैं' के माध्यम से समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मनोभावों को अभिव्यक्त कर रहा है। वह स्मृतियों के द्वंद्व से मुक्ति की कामना करता है।

व्याख्या–कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से जीवन के दोनों पक्षों – सुख और दुख के मर्म को प्रस्तुत किया है। कवि का मानना है कि जीवन में ऐसे अनगिनत क्षण हैं जो उसे सुख प्रदान करते हैं, जो जीवन में नई ऊर्जा का संचार करते हैं, उत्साहित और उल्लसित करते हैं। साथ ही, वह अवसादों के क्षणों को भी याद करता है। कवि के जीवन में ऐसे अनगिनत क्षण आते हैं जब वह अवसादों से घिर जाता है और बहुत दुखी और उदास हो जाता है।

कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से मनुष्य के जीवन के सुख-दुख – दोनों पक्षों की बात की है। 'मैं' का प्रयोग कवि के साथ ही समाज के किसी भी व्यक्ति के लिए हो सकता है। कवि कि यह वेदना है कि रात्रि के समय जब चारों ओर चुप्पी का वातावरण छा जाता है, शांति हो जाती है, उस समय किन बातों को याद करके वह अपना समय व्यतीत करे। उन्माद और अवसाद दोनों ही कवि को इस एकांत व सूनेपन में पीड़ा पहुँचा रहे हैं। वह असमंजस की स्थिति में है कि अकेलेपन में खुशी के क्षणों को याद करे या दुख के। सच तो यह है कि वह कुछ भी भूल नहीं पा रहा इसीलिए भूलने और याद करने की दुविधा में है।

टिप्पणी

(क) आप जानते हैं कि जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति होती वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। 'अगणित अवसादों के क्षण हैं' में 'अ' वर्ण की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

(ख) जहाँ एक ही शब्द की बार-बार आवृति होती है, वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है। 'रजनी की सूनी घड़ियों को किन-किन से आबाद करूँ मैं' पंक्ति में 'किन-किन' शब्दों की आवृत्ति के कारण पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(ग) खड़ी बोली के सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है।

(घ) भाषा भावानुकूल एवं प्रवाहमयी है।

(ङ) इस कविता में बार-बार 'क्या' और 'किन' शब्दों के प्रयोग सार्थक हैं। यहाँ कवि प्रश्न नहीं कर रहा है, बल्कि वह कह रहा है कि याद करने को उसके पास बहुत कुछ है।

पाठगत प्रश्न 5.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि ने उन्मादों के क्षण कहा है–

(क) याद करने को (ख) भूलने को

(ग) स्मृतियों को (घ) सूनेपन को

टिप्पणी

2. प्रस्तुत पंक्तियों में 'किन-किन' का प्रयोग हुआ है–

(क) भूलों के लिए (ख) सूनी घड़ियों के लिए

(ग) रजनी के लिए (घ) उन्माद के क्षणों के लिए

अंश-2

आइए, अगली चार पंक्तियों को पुनः पढ़ें और समझें-

याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की, दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से अपने
दिन बर्बाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

प्रसंग– कवि के जीवन में सुख-दुख दोनों रहे हैं। वर्तमान में सुख-दुख को याद करता है, तो उसे उदासी घेर लेती है। इस उदासी का कारण वह अपने को ही मानता है।

व्याख्या– आप इस बात से सहमत होंगे कि आँसू प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के सच्चे साथी होते हैं, क्योंकि ये हर समय साथ देते हैं– चाहे सुख का समय हो या दुख का। हमारे जीवन में हमारा प्रिय या संबंधी यदि हमारे पास नहीं होता, तो उसके साथ बिताए गए अच्छे समय की यादें भी आँखों में आँसू ले आती हैं। ये आँसू खुशी के होने के साथ-साथ दुख भी लिए हुए होते हैं। कवि बच्चन ने इसी मनोभाव को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सुख में बीते हुए समय को याद करके भी व्यक्ति की आँखों में आँसू आ जाते हैं, क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि जो खुशी के पल बीत चुके हैं वे अब दोबारा वापस नहीं आ सकते। सुख के बीते पलों के साथ दुख के वर्तमान दिनों को जोड़ देने से मन व्यथित हो जाता है। पीड़ा में डूबे व्यक्ति के लिए स्वयं को मानसिक और शारीरिक– दोनों ही रूपों से संभालना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने वर्तमान के साथ तालमेल नहीं बैठा पाता और अपने कर्त्तव्य को भी नहीं निभा पाता। संवेदनशील कवि इस स्थिति को भली-भाँति समझते हैं इसीलिए वे अपने निजी जीवन के अनुभवों से बहुत दुखी होते हैं। परंतु केवल दुखी रहने से और अवसादों से घिरे रहने से जीवन व्यतीत करना संभव नहीं है, इसलिए कवि का मानना है कि मैं खुद ही अपने वर्तमान को नष्ट कर रहा हूँ। इसका आशय यह कि व्यक्ति खुद ही अपने आपको कष्ट देकर अपना समय बर्बाद कर रहा है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि यह सीख देना चाहता है कि जीवन के अवसादों से निकलकर वर्तमान में जीवन-यापन करना ही श्रेयस्कर है, क्योंकि जो कुछ बीत चुका उसे बदला नहीं जा सकता। अपने वर्तमान समय को व्यर्थ करके, कर्तव्यों से भागकर जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता।

चित्र 5.3 : एक दुखी व्यक्ति

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 5.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. प्रस्तुत अंश में कवि किसे दोष देता है–

   (क) स्वयं को (ख) भूलों को

   (ग) दुख को (घ) आँसुओं को

2. दुखों की याद कवि पर क्या प्रभाव डालती है–

   (क) उसकी आँखों में आँसू दे जाती है।

   (ख) वह दूसरों को दोष देने लगता है।

   (ग) उसका मन व्यथा में डूब जाता है।

   (घ) उसका दिल भारी कर जाती है।

अंश-3

कविता के शेष अंतिम अंश को एक बार फिर से पढ़ लीजिए।

दोनों करके पछताता हूँ,
सोच नहीं, पर, मैं पाता हूँ,
सुधियों के बंधन से कैसे अपने
को आज़ाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

प्रसंग – इन पंक्तियों में कवि ने उन्माद और अवसाद के क्षणों को याद करते हुए मन पर होने वाले प्रभाव को व्यक्त किया है। यहाँ वह स्वयं को यादों के बंधन से छुटकारा पाने का रास्ता ढूँढ रहा है।

व्याख्या – कवि के सुख और दुख की स्मृतियों में डूबे रहने से केवल दुख ही प्राप्त होता है। स्मृतियाँ चाहे सुख की हों या दुख की, कवि का मानना है कि इन्हें याद करके केवल पछतावा होता है, क्योंकि वह इन पलों को अपने जीवन में वापस कभी भी नहीं ला सकता। इतना सब समझते हुए कवि अपनी विवशता को व्यक्त करता है। जानते हैं कि यह विवशता क्या है? यह है–यादों के बंधन से स्वयं को मुक्त न कर पाना। कवि ने बड़े ही मार्मिक तरीके से इस बात को कहा है कि यादों से छुटकारा पाना उसके वश में नहीं है। ऐसा नहीं कि यह कवि के साथ ही हो रहा है। यह सभी के साथ होता है। हमारे साथ भी। कवि ने बड़े प्रभावी तरीके से जीवन पर यादों के पड़ने वाले प्रभाव को यहाँ व्यक्त किया है।

टिप्पणी–

(क) इस कविता में, कवि ने शब्दों का संकेतात्मक प्रयोग किया है। 'सुख' और 'दुख' का अर्थ है– 'सुख के दिन' और 'दुख के दिन'।

(ख) आप जानते हैं कि कवि ने 'दिल भारी होना' मुहावरे का प्रयोग किया है। इसका अर्थ है–दुखी होना या उदास हो जाना।

(ग) लाक्षणिकता का प्रयोग भी इस कविता में है जब कवि कहता है–'सुधियों के बंधन से कैसे अपने को आजाद करूँ मैं!' इसका अर्थ है कि कवि पर यादें बहुत अधिक प्रभाव डाल रही हैं, वह पुरानी यादों से मुक्त नहीं हो पा रहा।

5.6 भाव-सौंदर्य

हर अनुभवी व्यक्ति के जीवन में ऐसा समय आता है जब वह अतीत के अनगिनत सुख-दुख वाले दिनों को याद करता है। इन दिनों को याद करके वह वर्तमान में प्रसन्न होता है या उदास होता है। उदासी या दुख भाव की प्रभावशाली अभिव्यक्ति इस कविता में हुई है। कवि ने बड़े मार्मिक ढंग से इस बात की अभिव्यक्ति की है कि स्मृतियों या यादों से छुटकारा पाना किसी के लिए संभव नहीं होता। वर्तमान के सूनपने में स्मृतियाँ हलचल भर देती हैं।

5.7 शिल्प-सौंदर्य

इस भावुकतापूर्ण कविता की भाषा सहज-सरल है। इसमें संकेतात्मक शब्दों का प्रयोग हुआ है। लाक्षणिकता भी है। 'अनुप्रास' एवं 'पुनरुक्ति-प्रकाश' अलंकार हैं। 'दिल भारी होना' मुहावरा है। कविता की पंक्तियाँ प्रश्नात्मक हैं, पर वे प्रश्न न होकर 'बहुत कुछ' होने को अभिव्यक्त करती हैं।

पाठगत प्रश्न 5.5

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि के प्रस्तुत अंश में अधिकता है–

(क) क्रोध की (ख) नाराजगी की

(ग) ईर्ष्या की (घ) विवशता की

2. कवि स्वयं को किसके बंधन में पाता है–

(क) अतीत की यादों के (ख) सोच न पाने के

(ग) भूलने के (घ) पछतावे के

5.8 आपने क्या सीखा : चित्रात्मक प्रस्तुति

उत्तर छायावादी कविता

रामधारी सिंह 'दिनकर'	**हरिवंश राय 'बच्चन'**
भाव-सौंदर्य :	भाव-सौंदर्य :

टिप्पणी

- देशप्रेम, वीरता और ओज का समन्वय
- प्रेरणा, उत्साह और उमंग
- वैराग्य का खंडन

शिल्प-सौंदर्य :

- लाक्षणिकता
- ओजपूर्ण शब्दावली
- तत्सम शब्दावली
- लयात्मकता एवं गत्यात्मकता

- स्मृतियों का प्रभाव
- सुख-दुख की साथ-साथ अनुभूति
- वर्तमान के सूनेपन में स्मृतियों की हलचल
- स्मृतियों से छुटकारा संभव नहीं

शिल्प-सौंदर्य :

- सहज-सरल भाषा
- लाक्षणिकता
- सांकेतिकता
- प्रश्नात्मक शैली
- अनुप्रास और पुनरुक्ति-प्रकाश अलंकार

5.9 सीखने के प्रतिफल

- अपने साथियों के समक्ष अपने भावों की ज़रूरतों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
- नई रचनाएँ पढ़कर उन पर साथियों से बातचीत करते हैं।
- कविता को अपनी समझ के आधार पर नए रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए, उनके सौंदर्य-पक्ष एवं व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा करते हैं।
- राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- भाषायी अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों से राष्ट्र के प्रति लगाव को अभिव्यक्त करते हैं।

5.10 योग्यता विस्तार

(क) कवि-परिचय : रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर का' जन्म 1908 ई. में सिमरिया, ज़िला मुंगेर में हुआ। उन्होंने बी. ए. तक पटना विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और सीतामढ़ी में सब-रजिस्ट्रार पद पर कार्य प्रारंभ किया। वे राज्यसभा के सदस्य (1952-1964) रहे और भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति (1964-1965) तथा भारत सरकार में हिंदी सलाहकार (1965-1971) के पद पर कार्यरत रहे। उनकी लगभग 50 कृतियाँ प्रकाशित हैं।

हिंदी काव्य-जगत को छायावादी प्रभाव से मुक्त करने वाले कवियों में दिनकर का नाम प्रमुख है। दिनकर की प्रवाहमयी ओजस्विनी कविताओं का हिंदी साहित्य में विशिष्ट महत्व है। उनके प्रमुख प्रबंध-काव्यों में कुरुक्षेत्र (1946 ई.), रश्मिरथी और उर्वशी (1961 ई.) शामिल हैं।

उनकी गद्य-रचनाओं में 'संस्कृति के चार अध्याय' प्रमुख है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'मिट्टी की ओर', 'काव्य की भूमिका'; 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त', 'शुद्ध कविता की खोज' आदि अनेक समीक्षात्मक निबंध भी लिखे। उनका देहावसान सन् 1974 में हुआ।

(ख) हरिवंशराय 'बच्चन'

हरिवंशराय 'बच्चन' का जन्म 27 नवंबर, 1907 में हुआ। वे उत्तर छायावाद के प्रमुख कवियों में हैं। 'मधुशाला' उनकी लोकप्रियता का आधार है। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी का अध्ययन किया। उसके बाद वे भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे। वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे।

बच्चन जी ने अनेक विधाओं में लेखन किया। 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा निमंत्रण', 'सतरंगिनी', 'खादी के फूल', 'बुद्ध और नाचघर' (सभी कविता-संग्रह) और 'क्या भुलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर', 'दशद्वार थे सोपान तक' (आत्मकथा) उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। बच्चन जी को अनेक पुरस्कार एवं सम्मान मिले, जो हैं–साहित्य अकादमी सम्मान, सोवियत लैंड नेहरू सम्मान, सरस्वती सम्मान एवं पद्म भूषण। 18 जनवरी, 2003 को मुंबई में उनका देहांत हुआ।

5.11 पाठांत प्रश्न

1. कवि दिनकर देशवासियों को योगी के स्थान पर विजयी बनने का संदेश क्यों दे रहे हैं? प्रस्तुत कीजिए।
2. दिनकर की कविता में अनेक स्थानों पर लाक्षणिक प्रयोग हुआ है। ऐसी चार पंक्तियों का उल्लेख कीजिए।
3. स्वाधीनता हमारे लिए क्यों आवश्यक है? 'परशुराम के उपदेश' के आधार पर किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए।
4. स्वाधीनता और उद्यम का क्या संबंध है? उल्लेख कीजिए।
5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

   वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
   चट्टानों की छाती से दूध निकालो।

है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।

6. 'अगणित उन्मादों के क्षण' से कवि का क्या आशय है?

7. 'सुधियों' को 'बंधन' क्यों कहा गया है?

8. 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' एक भावुकतापूर्ण कविता क्यों है?

9. 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' कविता में कवि की विवशता की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है?

10. 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' कविता की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

5.12 उत्तरमाला

बोध प्रश्न 5.1

1. (ग)
2. (क)
3. (घ)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1 1. (ग) 2. (ख)

5.2 1. (क) 2. (क)

बोध प्रश्न 5.2

1. (घ) 2. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.3 1. (ग) 2. (घ)

5.4 1. (क) 2. (घ)

5.5 1. (घ) 2. (क)